LOK SABHA

Thursday, July 21, 1977/Asadha 30, 1899 (Saka)

The Lok Sabha met at Eleven of the Clock.

[MR. DEPUTY-SPEAKER *in the Chair*]

ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

Manufacture of Indigenous Medicines in Public Sector and by Cooperatives

*565. SHRI ANANT DAVE: Will the Minister of HEALTH AND FAMILY WELFARE be pleased to state:

(a) whether there is a proposal under consideration of the Government to manufacture Ayurvedic, homoeopathic and other indigenous medicines in the Public Sector and by Cooperatives;

(b) if so, the salient features of the proposal; and

(c) when a final decision is likely to be taken in the matter?

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री (श्री राज नारायण) : (क) रानीखेत में भारतीय चिकित्सा की एक केन्द्रीय फार्मेसी के प्रबंध को चलाने के लिए कम्पनी अधिनियम 1956 के अन्तर्गत सरकारी क्षेत्र में एक निगम की स्थापना करने का निर्णय लिया गया है।

(ख) इस निगम के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार होंगे :—

(i) हिमालय क्षेत्र से अच्छी किस्म की जड़ी बूटियां एकत्र करना।

(ii) दवाइयां तैयार करने के लिए अपेक्षित जड़ी बूटियां पर्याप्त मात्रा में उगाना।

(iii) औषधियां तैयार करना और उन्हें शुरू में केन्द्रीय सरकार स्वास्थ्य योजना के औषधालयों और भारतीय चिकित्सा पद्धति एवं होम्योपेथी की केन्द्रीय अनुसंधान परिषद को बेचना। किन्तु, जैसे-जैसे औषधियों के उत्पादन में वृद्धि होती जाएगी उन्हें वैसे-वैसे अन्य अस्पतालों/संस्थाओं और बाजार में भी उनकी सप्लाई की जाएगी।

दवाईयां तैयार करने में आवश्यक मशीनों तथा अधिक से अधिक श्रमिकों को उपयोग में लाया जाएगा।

(ग) यह प्रश्न नहीं उठता।

श्री एम० रामगोपाल रेड्डी: (ग) का प्रश्न क्यों नहीं उठता है ?

श्री अनन्त दवे: यह निर्णय मंत्री महोदय ने एक कांफरेंस में उस समय घोषित किया था, जब कि संसद् का सत्र चल रहा था, हालांकि इस की घोषणा पहले संसद में करनी चाहिए थी। मैं जानना चाहता हू कि इस कांफ़रेंस में किस-किस स्तर के लोगों ने भाग लिया, उन्होंने क्या महत्वपूर्ण सिफारिशें की और संसद् का सत्र चलते हुए भी इस निर्णय की घोषणा पहले वहां क्यों की गई।

श्री राज नारायण: इस का प्रश्न से सीधा सम्बन्ध तो नहीं है, लेकिन सदस्यों को जानकारी देना मंत्री का कर्त्तव्य होता

है। जब संसद का सत्र नहीं होता है, तो हम कोई भी निर्णय लेने के लिए सक्षम हैं। हमारी कांफ्रेंस होती है, हम बड़े अच्छे अच्छे विद्वानों को बुलाते हैं और उन की सलाह लेकर कोई निर्णय करते हैं।

उधर से माननीय सदस्य ने पूछा है कि (ग) का प्रश्न क्यों नहीं उठता है। (ग) में प्रश्न किया गया है कि इस मामले में अन्तिम निर्णय कब तक लिये जाने की सम्भावना है। उत्तर में मैं ने बताया है कि इस का प्रश्न नहीं उठता है, क्योंकि हम ने निर्णय ले लिया है और उस निर्णय के मुताबिक कार्यक्रम चल रहा है।

श्री अनन्त दवे : इस कांफ्रेंस की सिफ़ारिशों के बारे में कहा गया है :

"The Conference has also recommended the establishment of a National Institute of Indian systems of medicine including naturopathy, homoeopathy and a Central University in Delhi."

मैं जानना चाहता हूं कि क्या सरकार दिल्ली में एक केन्द्रीय आयुर्वेदिक विश्वविद्यालय बनाने के बारे में सोच रही हैं।

श्री राज नारायण : यह प्रश्न इस से नहीं उठता है। इस सम्बन्ध में आगे एक प्रश्न है। उस के उत्तर में यह बात साफ़ हो जायेगी।

श्री अनन्त दवे : मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं मिला है कि इस कांफ्रेंस में किस-किस स्तर के लोगों ने भाग लिया और उन की महत्वपूर्ण सिफ़ारिशें क्या हैं।

श्री राज नारायण : प्रश्न का भाग (क) यह है : "क्या सरकारी क्षेत्र तथा सहकारी क्षेत्र में आयुर्वेदिक, होम्योपैथिक और अन्य देशी औषधियों के उत्पादन के लिए कोई प्रस्ताव सरकार के विचाराधीन है।" मैं ने उत्तर में कहा है कि इस बारे में निर्णय लिया जा चुका है। भाग (ख) इस प्रकार है : "यदि हां, तो इस प्रस्ताव की मुख्य बातें क्या हैं।" वे बातें मैं ने बता दी हैं। भाग (ग) में पूछा गया है : "इस मामले में अन्तिम निर्णय कब तक लिये जाने की सम्भावना है।" जब हम ने पहले ही निर्णय ले लिया है, तो आगे किसी सम्भावना का प्रश्न ही नहीं उठता हैं। मैं ने सब प्रश्नों का उत्तर दे दिया है।

डा० कर्ण सिंह : मैं आप के माध्यम से माननीय मंत्री महोदय से एक प्रश्न पूछना चाहता हूं जिस के दो भाग हैं। पहला तो यह कि जो इन्होंने कहा कि निर्णय ले लिया गया है, मैं विनम्र प्रार्थना करूंगा कि यह निर्णय आज नहीं, यह निर्णय तो मैं ने छः महीने या 1 वर्ष पहले ले लिया था, मैं पूछना चाहता हूं कि यह निर्णय कार्यान्वित कब होगा और यह जो कारपोरेशन बन रहा है यह आस्तित्व में कब आएगा।

दूसरा प्रश्न यह है हिमालय औषधियों का एक बड़ा भण्डार है —

पूर्वापरौ: तोयनिधीऽ वगाहय स्थित:
पृथिव्यामिव मानदण्ड : ।

हिमालय की यह कल्पना महाकवि कालिदास ने की है, तो रानीखेत में यह बन रहा है, इस बात की हमें बड़ी प्रसन्नता है। लेकिन उसके साथ-साथ समस्त हिमालय क्षेत्र में यह जो औषधियां है इन का अधिक से अधिक लाभ किस प्रकार से उठाया जाय इसके लिए क्या इस प्रकार के और कारपोरेशन या अन्य कारपोरेशन हिमालय के दूसरे अंगों में या इसी कारपोरेशन के और भाग हिमालय के अन्य भागों में भी बनाने की कोई योजना है ?

श्री राज नारायण : अस्तुतरस्यां दिशिदेवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराज: पूर्वापरयो: तोयनिधीऽ वगाहय स्थित: पृथिव्या: इव मानदंड : ॥

माननीय कर्ण सिंह जी ने कालिदास के इस श्लोक का आधा भाग ही कहा था ।

श्री मुहम्मद शफी कुरेशी : इस का तर्जुमा होना चाहिए जिस से हम लोग भी समझ सकें ।

श्री राज नारायण : अगर सदर साहब की इजाजत हो तो मैं तर्जुमा कर दूंगा ।

हिमालय पहाड़ का वर्णन कालिदास की अपने कुमारसंभव के प्रथम श्लोक में करते हैं हे हिमालय, तुम पर्वतों के राजा हो, देव-तुल्य हो, भारतवर्ष के उत्तर पूर्व में फैले हुए हो और बराबर मानदण्डा के समान समुद्र का अवगाहन करते रहते हो ।

उस हिमालय को कांग्रेस सरकार ने बेच दिया । और उस हिमालय के बारे में मैं और बता दूं : मुझे बड़ी प्रसन्नता है, मैं कर्ण सिंह जी की बड़ी इज्जत करता हूं क्योंकि वह भारतीय संस्कृति के एक प्रतीक भी हैं यद्यपि वे शेरवानी और पाजामा पहनते हैं । मैं उन से विनम्रता के साथ निवेदन करना चाहता हूं कि केवल कालिदास ने ही नहीं, मत्स्य पुराण में भी हिमालय का वर्णन किया है—

अहीन शरणं नित्यं
अहीन जन सेविताम
अहीन पश्यति गिरिं ।
अहीन रत्न सम्पदा ।।

हिमालय का यह वर्णन मत्स्य पुराण में है कि है हिमालय, तुम अहीन हो यानी एश्वर्यशाली हो, तुम्हारे पर वही वास पा सकता है, तम्हारी शरण पा सकता है जो एश्वर्यशाली हो, तुम्हारी ओर वही देख सकता है, ताक सकता है जो एश्वर्यशाली हो क्यों कि तुम रत्न सम्पदाओं से भरे पड़े हो । यह हिमालय का वर्णन मत्स्य पुराण का है ।

मैं निहायत अदब के साथ इस सदन के सम्मानित सदस्यों की जानकारी के लिए कहना चाहता हूं कि भारतवर्ष में एक ऐसी हिंजड़ी और नपुंसक सरकार आई जिस की हिमालय की ओर ताकने की हिम्मत नहीं पड़ी और हिमालय का तिब्बत, कैलाश, मानसरोवर और संगपू नदी सब का सब चीन को दे दिया गया ।

डा० कर्ण सिंह : अध्यक्ष महोदय, मेरे प्रश्न का उत्तर कहां आया जो मैं ने पूछा था ।

श्री राज नारायण : मैं दे देता हूं । अभी-अभी हम ने वहां पर रानीखेत में एक कम्पनी देसी औषधियों को बनाने के लिए खोल दिया है । इस के बारे में आगे एक सवाल है जिस में पूरा उत्तर आ जायगा कि उसमें क्या क्या उपकरण होंगे, कितने लाख रुपये की योजना है, क्या क्या जड़ी बूटियां वहां पर उपलब्ध हो रही हैं, कैसे-कैसे उसका कार्यक्रम चल रहा है, यह सब आगे के प्रश्न में आ रहा है । अगर जनाब सदर दोनों को एक में जोड़ दें तो मैं उस को भी ले लूं ।

श्रीमती चन्द्रावती : क्या माननीय मंत्री जी बताएंगे कि अगर डा० कर्ण सिंह हिमालय में जड़ी बूटियों की खोज का अभियान चलाएं तो सरकार उनको पूरी मदद देगी ?

श्री राज नारायण : जी हां, सहर्ष और मैं उनसे अनुनय विनय आज ही से कर देता हूं कि वे उस जगह बैठना छोड़ दें और इसी कार्यक्रम में लग जायं आज से ही ।

श्री एम० रामगोपाल रेड्डी : मंत्री जी का प्रवचन सुनने के बाद मैं एक छोटा सा प्रश्न करना चाहता हूं कि जड़ी बूटियों से जो दवाइयां बनाई जा रही है क्या वह एयर कंडीशण्ड इमारतों में बनाई जा रही हैं, खुले

मैदान में बनाई जा रही हैं या फैक्टरियों में बनाई जा रही हैं ?

श्री राज नारायण : माननीय सदस्य ने जो प्रश्न किया हैं, मैं यह तो नहीं कहूंगा कि वह महत्वहीन है, इतना ही कहूंगा कि उसमें कुछ दम है। मैं उनको बताना चाहता हूं कि बिल्कुल मैदान में दवाई नहीं बनती। दवाई जहां बनेगी वहां उसके लिए कोई बिल्डिंग होगी, कोई भवन होगा, उसके लिए मशीनें होंगी और उसको बनाने के लिए जो आवश्यक उपकरण हैं वह सब जुटाये जायेंगे और वह सब जुटाये जा रहे हैं। एयरकंडीशन्ड होने की वहां जरूरत नहीं है। हमारे मित्र हिमालय को समझ नहीं रहे हैं, डा० कर्ण सिंह जी समझते हैं कि हिमालय खुद ही एयरकंडीशन्ड हैं। वहां अगर सम्मानित सदस्य चले जायं तो इन कपड़ों से काम नहीं चलेगा। (**व्यवधान**)

श्री एम० राम गोपाल रेड्डी : धीरेन्द्र ब्रमंचारी ने वहां एयरकडीशन्ड बनाया है।

श्री राज नारायण : कांग्रेस पार्टी के सम्मानित सदस्यों पर बराबर ब्रह्मचर्य का भूत सवार रहता है, वे धीरेन्द्र ब्रह्मचारी को अपने दिमाग से निकाल दें।

श्री कृष्ण चन्द्र हाल्दर : मन्त्री जी को मालूम है कि पश्चिम बंगाल के उत्तर पूर्व में हिमालय पर्वत है और पश्चिम बंगाल की सरकार भी आयुर्वेदिक औषधियां बनाने की कोशिश कर रही हैं। पश्चिम बंगाल में केन्द्रीय क्षेत्र से आयुर्वेदिक दवाई बनाने का कारखाना बनाने की योजना है तो क्या केन्द्रीय सरकार इसमें सहायता देगी ?

श्री राज नारायण : मैं माननीय सदस्य की राय से पूर्णतया सहमत हूं। आयुर्वेदिक, यूनानी या भारतीय चिकित्सा की किसी पद्धति को विकसित करने के लिए राज्य सरकारें जितना भी काम करेंगी उसमें हमारी जितनी शक्ति होगी मदद देने की हम सब मदद देंगे।

श्री यज्ञदत्त शर्मा : माननीय मन्त्री जी ने आयुर्वेदिक औषधियों के संग्रह की बात कही तो मैं जानना चाहता हूं क्या उनकी जानकारी में यह बात है कि अनेक प्रकार के महत्वपूर्ण द्रव्य तिरोहित हो रहे हैं जैसे कस्तूरी है, कस्तूरी मृगों के लुप्त होने के कारण कस्तूरी उपलब्ध नहीं हो रही है। इसी प्रकार से बंसलोचन है जो कि बांसों के जंगल कटने से उपलब्ध नहीं हो रहा है। इसी प्रकार, मेघा, महामेघा, ऋद्धि आदि अष्टवर्ग की औषधियां भी हैं जो उस क्षेत्र से निकल रही हैं। ऐसी अवस्था में आयुर्वेदिक औषधियों की रचना में बहुत बड़ा विकार आ रहा है। क्या मन्त्री महोदय ने इस सम्बन्ध में कोई ऐसा सेल कायम किया है, कोई रिसर्च डिपार्टमेंट या रिसर्च लेबोरेटरी कायम की है जो कि इन औषधियों को फिर पुनर्जीवित कर सके, इनको फिर से लगाया जा सके और उसके सम्बन्ध में पूरी जानकारी दी जा सके क्योंकि यह औषधियां विवादास्पद भी हैं।

श्री राज नारायण : जी हां। मैं माननीय सदस्य को इस बात की जानकारी करा दूं कि रानीखेत में जो हमने कम्पनी बनाने का निर्णय लिया है वह निर्णय असल में पहले का नहीं था, डा० कर्णसिंह जी को शायद गलतफहमी थी कि यह निर्णय पहले का था। यह तो अभी कैबिनेट की जो तीसरी या चौथी मीटिंग हुई थी उसमें कम्पनी खोलने का निर्णय लिया गया था।

डा० कर्ण सिंह : मन्त्रालय का निर्णय पहले का था, कैबिनेट का निर्णय अब हुआ है।

श्री राज नारायण : मन्त्रालय ही तो मस्विदा बना कर कैबिनेट के सामने रखता

है । जनता पार्टी की सरकार के मन्त्रालय ने अपना मस्विदा बना कर कैबिनेट के सामने पेश किया । माननीय कर्णसिंह जी उस मन्त्रालय के सम्मानित मन्त्री रहे हैं, उनको आसानी से इस बात की जानकारी हो जानी चाहिये थी कि मन्त्रालय पहले मसविदा बनाता है, फिर उस मसविदे को कैबिनेट के सामने पेश करता है, कैबिनेट के सदस्य उसको एप्रूव करते हैं ।

हमने कम्पनी बनाने का फैसला कर लिया है, वह भवन उपलब्ध हो रहा है । इसमें 11 लाख रुपया खर्च होगा—साढ़े सात लाख रुपया भवन और उपकरणों आदि पर और ढाई-तीन लाख रुपया दवाइयां और जड़ी-बूटियां खरीदने पर । वहां केसर की खेती भी करवाने जा रहे हैं । बंसलोचन के बारे में भी सम्मानित सदस्य ने पूछा था—बंसलोचन को किस तरह से उपजाया जाय, सुरक्षित किया जाय, इसकी व्यवस्था भी हो रही है । कस्तूरी के बारे में भी विचार-विनिमय चल रहा है कि किस तरह से शुद्ध कस्तूरी उपलब्ध हो सके, क्योंकि बहुत सी दवाइयों में कस्तूरी की आवश्यकता पड़ती है । हाथ, शरीर, अंगप्रत्यंग की अनुप्राणित करने वाली दवाइयों में कस्तूरी का अंश जरूर पड़ता है ।

हमारे बंगाल के एक माननीय सदस्य ने पहले जो प्रश्न पूछा था, मैं उन्हें इतना और कहना चाहता हूं कि वैस्ट बंगाल को इस सम्बन्ध में पहले भी मदद दी गई थी और आगे भी जो मदद कर सकते हैं, वह जरूर करेंगे ।

श्री दुर्गा चन्द : मैं माननीय मन्त्री जी से यह जानना चाहता हूं कि अपने देश में आयुर्वेद के जितने अस्पताल और डिस्पैंसरीज हैं—इनमें कितने परसेन्ट दवाइयां गवनमेंट की फार्मेसीज की प्रोडक्ट होती है और कितने परसेन्ट प्राइवेट कारखानों से लेकर ज़रूरत को पूरा किया जाता है ?

श्री राज नारायण : मैं सम्मानित सदस्य को पुन: मुबारकवाद देता हूं । उपाध्यक्ष महोदय, मैं चाहूंगा कि थोड़ा समय देकर मुझे इस प्रश्न का उत्तर देने का मौका दिया जाय, क्योंकि बिना विस्तार से बताये सम्मानित सदस्य फिर अनेक प्रश्न पूछेंगे ।

सबसे पहले तो अखिल भारतीय स्तर पर हमारे औषधालय कहां-कहां हैं—इसको समझ लें । भारत सरकार ने जयपुर में एक आयुर्वेदीय राष्ट्रीय संस्थान खोला है । चिकित्सा का एक ऐसा ही संस्थान पूना में खोला जा रहा है । सिद्ध, यूनानी, आदि के भी ऐसे ही संस्थान यथासमय खोले जायेंगे । इसी तरह से योगा के लिये दिल्ली में एक अनुसन्धान केन्द्र खोला जा रहा है, विश्वायतन योगाश्रम की पहले काफ़ी चर्चा हो चुकी है ।

अब मैं राज्यों के बारे में भी बतला दूं कि भारतवर्ष में किन-किन राज्यों में तथा कहां-कहां आयुर्वेद के कालिजिज है ।

आन्ध्र

1. गवर्नमेंट आयुर्वेदिक, कालिज, चन्दूलाल बेला, हैदराबाद ।
2. गवर्नमेंट अनन्त लक्ष्मी आयुर्वेदिक कालिज, स्टेशन रोड, वारंगल ।
3. डा० नारीराम शास्त्री गवर्नमेंट आयुर्वेदिक कालिज, विजयवाड़ा ।
4. श्री रंगाचारी राममोहन आयुर्वेदिक कालिज, गुन्टूर

आन्ध्र में ये चार कालिजिज हैं, इनके अतिरिक्त गैर-सरकारी कालिजिज भी है, उनकी सूचना हम मंगा रहे हैं ।

असम

5. गवर्नमेंट आयुर्वेदिक कालिज, गौहटी

बिहार

6. गवर्नमेंट आयुर्वेदिक कालिज, पो० कदमकुआं, पटना ।

7. श्री यतिन्द्र नारायण अष्टांग आयुर्वेदिक कालिज, चम्पानगर, भागलपुर ।

8. अयोध्या शिवकुमारी आयुर्वेदिक कालिज, बेगूसराय, जिला चम्पारन ।

गुजरात

9. सेठ जे० पी० आयुर्वेद महाविद्यालय, ओल्ड सामलदास कालिज, वादवा, भावनगर, (सौराष्ट्र)

10. श्री अखण्डानन्द आयुर्वेद महाविद्यालय, अपोजिट विक्टोरिया गार्डन, भादरा, अहमदाबाद ।

श्री बसन्त साठे : इसको टेबिल पर रख दीजिये ।

श्री राज नारायण : उपाध्यक्ष महोदय, जब मैं विरोध पक्ष में होता था, तो मैं कहता था कि सरकार उत्तर को छिपाती है, उसको पूरा उत्तर देना चाहिये । मेरी मांग होती थी कि सरकार पूरा उत्तर दे । अब जब मैं सरकारी पक्ष में हूं और पूरा उत्तर देने लगता हूं तो विरोध पक्ष सुनने से इंकार करता है ।

श्री बसन्त साठे : आप उत्तर को पुस्तिका के रूप में देना चाहते हैं—इससे कठिनाई होती है ।

श्री राज नारायण : तब मैं इतना ही बता देना चाहता हूं कि इसी तरह से आयुर्वेद के और भी सरकारी औषधालय हैं ।

Setting up of Committee of Members of Parliament for Calcutta Telephones

*566. SHRI SAMAR GUHA: Will the Minister of COMMUNICATIONS be pleased to state:

(a) whether he has considered the proposal for setting up of small Committee of the Members of Parliament to go into the grievances of Calcutta Telephone subscribers and suggest measures for improvement of the functioning of Calcutta Telephone; and

(b) if so, the action taken in pursuance thereof?

THE MINISTER OF COMMUNICATIONS (SHRI BRIJ LAL VERMA): (a) and (b). The proposal has been examined. The grievances of telephone subscribers are being looked into and attended to by Calcutta Telephone Administration on a continuing basis. The Telephone Advisory Committee which discusses various grievances of telephone subscribers and advises the Department on improvement of local and trunk services is shorty to be reconstituted for Calcutta. This Committee will have on it Members of Parliament, Members of Legislative Assembly and representatives of other civic and local organisations. A Committee of Senior Experts has been constituted to go into such aspects as organisational structure, procedures of work, system of forecasting and perspective planning necessary for efficient functioning of the four metropolitan Telephone Districts. In view of these, it is considered that a special Parliamentary Committee for going into the grievances of telephone subscribers of Calcutta Telephones is not necessary.

SHRI SAMAR GUHA: Sir, I am again to remind our hon. Minister of the Janata Party that although they are known as Janata Ministers, still I find that the 30 years ghost of Congress mentality is till not only haunting them, but also dominating their mind.